UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

वर्ष : ९१ • डिसेंबर २०२३ • पुरवणी विशेषांक ०५

G20
भारत 2023 INDIA

M.V.P. Kanya Mahavidyalaya
Estd.1989
Islampur Dist.Sangli

प्रकाशक : इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे संशोधन मंडळ,धुळे

Scanned with OKEN Scanner

ISSN No. 2394-5990

11. विश्वशांति के संदर्भ में आत्महत्याग्रस्त किसान के नारी जीवन संबंधी उपन्यासों का योगदान ('फाँस' के विशेष संदर्भ में)
- प्राजक्ता शिवाजी कुरळे ---------- 41

12. विश्वशांति और हिंदी कहानी
- डॉ. शोभा माणिक पवार ---------- 44

13. विश्वशांति एवं विकास में दक्खिनी हिन्दी भाषा का योगदान
- जहाँगीर स. शेख, ---------- 48

14. 'नरेश भारतीय कृत दिशाएँ बदल गईं उपन्यास में चित्रित विदेशी संस्कृति'
- कु. चारुशीला अनिल कदम ---------- 51

15. विश्वशांति और विकास में संतों का वैचारिक योगदान
- डॉ. अशोक मरळे ---------- 55

16. विश्वशांति एवं विकास में हिंदी के मध्ययुगीन संत साहित्य का योगदान
- डॉ.सूरज बालासो चौगुले ---------- 58

17. विश्वशांति एवं विकास में तुलनात्मक साहित्य की भूमिका
- डॉ.तांबोळी एस .बी. ---------- 62

18. कवि अटलबिहारी वाजपेयी जी की कविताओं में प्रतिबिंबित विश्वशांति एवं विकास का चित्रण
- डॉ. संदीप जोतिराम किर्दत ---------- 67

19. विश्वशांति एवं विकास में उपन्यास का योगदान
- डॉ. कुंदा मुकुंदराव निंबाळकर ---------- 71

20. **Treatment to the Human Values in Oscar Wilde's *The Importance of Being Earnest***
- Prof. Tanaji Sambhaji Deokule ---------- 75

ISSN No. 2394-5990

विश्वशांति और विकास में संतों का वैचारिक योगदान

डॉ. अशोक मरळे
स्नातक और स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
मालती वसंतदादा पाटील कन्या महाविद्यालय,
इस्लामपुर, जिला-सांगली, महाराष्ट्र

शोध सार :

संतों की शाश्वत वाणी का महत्व मध्ययुग में ही नहीं, विश्व शांति के लिए हर युग के लिए महत्वपूर्ण है। आज के संदर्भ में यदि संत साहित्य को देखा जाए, तो निश्चित तौर पर वर्तमान स्थितियाँ भी मध्ययुग जैसी ही लग रही है। विश्व में आज अनेक देश जातिवाद, सांप्रदायिकता तथा विस्तार लालसा के कारण युद्ध में झुलस रहे हैं। ऐसे देशों की सामान्य जनता इतनी बुरी हालत में जीवन जी रही है कि लगता हो मानो वे आज भी मध्ययुग में ही जीवन जी रहे हैं। इसलिए इस माहौल को अगर बदलना है तो सारे विश्व ने भारतीय संस्कृति की चिरंतन परंपरा और संतों के तेजस्वी विचारों को आत्मसात करना होगा, तभी उनका अहंकार नष्ट होकर विश्व में शांति निर्माण हो सकेगी।

संतों ने अपने साहित्य में भेदभाव से ऊपर उठकर स्वस्थ समाज का सपना देखा। वैश्वीकरण के इस दौर में संत साहित्य सारे विश्व को अपने उदात्त विचारों के कारण मार्गदर्शन कर विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। प्राचीन काल से चली आ रही यह संत परंपरा आगे चलकर स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी श्रद्धानंद, स्वामी विवेकानंद तक चली आई है। महात्मा गांधीजी इस परंपरा की अंतिम कड़ी है, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व और आचरण के माध्यम से संपूर्ण विश्व को शांति का संदेश दिया है।

बीज शब्द : सांप्रदायिकता, संस्कृति, चिंतन, प्रशस्त, अहंकार, वैश्वीकरण, समानता, संकीर्णता, विश्वबंधुत्व

प्रस्तावना :

संत साहित्य का चिंतन विभिन्न विचारधाराओं का अपूर्व संगम है। अज्ञान, अशिक्षा और अनैतिकता के अंधकारमय युग में संत कवि विश्व में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करने में सतत प्रयत्नशील रहे हैं। संतों के साहित्य में विचारों की भव्यता, भावों की संपन्नता और धार्मिक उदारता है जो आज के सांप्रदायिक संकीर्णता के विषम वातावरण में आज भी अत्यंत प्रासंगिक और उपयोगी है।

भारतीय संत परंपरा और विश्व शांति :

संतों के बारे में गीता में भी कहा है कि ''जो सुख एवं दुःख दोनों को ही समान भाव से देखता है, जिसे अपने मान-अपमान, स्तुति एवं निंदा की चिंता नहीं रहती, जो धैर्य से काम लेता है, वहीं संत है।''[1] स्पष्ट है कि विश्व में इसी प्रकार के आचरण की आवश्यकता है, जिसके परिणामस्वरूप सर्वत्र शांति प्रस्थापित हो सकती है। आज हर देश अहंकार में चुर है, जिसके चलते विध्वंसकारी युदधों का माहौल बना हुआ है। इसी कारण संतों के विचार और उनके आचरण का आदर्श संपूर्ण विश्व में शांति का माहौल बनाने में अपनी कारगर भूमिका निभा रहा है।

पं. परशुराम चतुर्वेदी के अनुसार संतकाव्य परंपरा का आरंभ गीतगोविंद के रचयिता जयदेव से मानते हैं तो आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने संत परंपरा का प्रारंभ संत नामदेव से माना है। शुक्ल जी ने लिखा है ''महाराष्ट्र देश के प्रसिद्ध भक्त नामदेव ने हिंदू-मुसलमान दोनों के लिए सामान्य भक्ति मार्ग का आभास दिया। उसके पीछे कबीरदास ने विशेष तत्परता के साथ एक व्यवस्थित रूप में यह मार्ग निर्गुणपंथ नाम से चलाया।''[2] नामदेव, कबीर, रैदास, रज्जब, दादूदयाल आदि कई संतों ने अपनी प्रखर प्रतिभा, सदृढ व्यक्तिमत्व और प्रोढ चिंतन एवं कवि सुलभ सुहृदयता के बल पर संत काव्य का प्रसार किया।

संतों ने प्रत्येक पक्ष पर लिखा है। उनका साहित्य अनुभव और प्रखर चिंतन से निर्माण हुआ है। संतों की शाश्वत वाणी का महत्व मध्ययुग में ही नहीं, विश्व शांति के लिए हर युग के लिए महत्वपूर्ण है। भावना की प्रमुखता के साथ-साथ संतों ने तत्कालीन समाज, धर्म व राजनीति के विविध संदर्भों को उठाकर अत्यंत ओजस्वी वाणी में अपना साहित्य रचा है। संतों द्वारा व्यक्त विचार तत्कालीन समाज के लिए जैसे उपयोगी थे, उससे भी कहीं अधिक वे आज उपयोगी हैं।

बहुसंख्यक समाज के सामने सहअस्तित्व को लेकर कोई कठिनाई नहीं थी। लेकिन कट्टरपंथी मजहबी तत्वों को सहअस्तित्व की यह धारणा अच्छी नहीं लगी। अल ईसा ने

H.V.P. Kanya Mahavidyalaya Estd.1989 Islampur Dist.Sangli

ISSN No. 2394-5990

दया लक्षित होती है, जिसकी विश्वशांति के लिए सबसे ज्यादा आवश्यकता है।

वर्तमान दौर में हम वैश्वीकृत दुनिया में रह रहे हैं। यह दुनिया एक गाँव के रूप में तब्दील हो गई है, जिसे ड्रग्लोबल विलेजफ कहा गया है। वैश्वीकरण के इस दौर में सारे विश्व के सामने असंतोष, युद्ध, अवसाद, पर्यावरणीय असंतुलन जैसी अनेक चुनौतियाँ खडी हैं। इसलिए वर्तमान युग में वैश्विक शांति की सबसे त्यादा आवश्यकता है। विश्व में समानता और मानवाधिकारों के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। आज भी साम्राज्यवाद, बाजारवाद एवं उपभोक्तावाद की गंभीर चुनौति विश्व के सामने हैं जिसने असंतोष को जन्म दिया है। संप्रदायवाद एवं आतंकवाद वैश्विक शांति के समक्ष सबसे बडे अवरोध हैं। असंतुलित आर्थिक विकास भी संपूर्ण विश्व के सामने बडी चुनौति है। अंधाधुंद औद्योगिकरण ने पर्यावरण असंतुलन को जन्म दिया है, जिसके कारण वैश्विक शांति में बाधा निर्माण हो रही है।

प्रकृति का होता ह्रास प्राचीन काल से संतों की चिंता का विषय रहा है। प्रकृति की सुंदरता, सरलता एवं स्वाभाविकता को बचाए रखने के लिए समाज प्रबोधन करने का काम यह संत सदियों से कर रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग, पानी की निरंतर होती जा रही कमी, जल-वायु प्रदुषण जैसी समस्याएँ हमें चेतावनी दे रही हैं कि अगर हम इसी तरह अंधाधुंद पर्यावरण को नष्ट करते जाएँगे तो मानव का अस्तित्व ही खतरे में आ सकता है। आज र्प्यावरण प्रदुषण और पर्यावरण में आ रहा परिवर्तन सारे विश्व के लिए चुनौति बन गया है, जिसके प्रति यह संत सदियों से सारे विश्व को सचेत कर रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण और वैश्विक शांति के लिए अहिंसा के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है। अहिंसा, करूणा और वात्सल्यपूर्ण व्यवहार से ही आज की विश्व के सामने खडी सारी समस्याओं का हल निकलेगा। विश्व में फैले असंतोष के कारणों को देखते हुए लगता है कि अब शांति प्राप्त करने के लिए युद्ध की विध्वंसकता को खत्म करना होगा। विश्व के सभी धर्म, संप्रदाय, पंथ और आध्यात्मिक आस्थावाले समुहों में समन्वय की आवश्यकता है। परंपरा और सिद्धातों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अंकन करते हुए विश्व के शांति प्रयत्नों में उसकी सहभागिता को महत्व देना होगा।

उपसंहार :

वैश्विक शांति हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। संत देश के असली नायक हैं। संतों ने अपने ज्ञान तथा त्याग और तपस्या के बल पर समाज को एक नई दिशा प्रदान की। सामाजिक और धार्मिक कट्टरता वैश्विक एकता को हानी पहुँचा रही है। एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या और व्देष की भावना मानवता का हनन कर रही है। नफरत की भावना मानवी विकास की प्रगति अवरूद्ध करती है और विवेक शून्यता का जन्म होता है। ऐसे समय में संतों के साहित्य में समानता के भाव, जातिवाद, सांप्रदायिकता जैसी अमानवीय समाज व्यवस्था का विरोध व्यक्त हुआ है।

भारतीय संस्कृति प्राचीनतम एवं महान संस्कृति है, सर्वधर्म समभाव जिसका मूलमंत्र है। भारतीय होने के नाते अपने देश की महान संस्कृति एवं वसुधैव कटुंबकम के संदेश को विश्वभर में फैलाना गौरव का विषय होगा। विश्व शांति व सद्भावना स्थापित करने में संतों की निष्ठा और समर्पण प्रशंसनीय है। सभी संतों का साहित्य और उनके विचार कालातीत है। उनको समय और देश की सीमाएँ नहीं बांध सकती। उनके सिद्धांत हजारों वर्ष पहले जितने प्रासंगिक थे, उतने ही आज हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

1. सुंदरदास श्याम (सं.) कबीर ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2019
2. आ. शुक्ल रामचंद्र -हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1952
3. दीक्षित हृदयनारायण -लेख-भारतीय वेद और विश्व शांति की प्रार्थना, हिन्दुस्तान समाचार, 6 नवंबर, 2023
4. व्दिवेदी प्रभाशंकर-भारतीय संत काव्य और संस्कृति, वल्लभ प्रकाशन, बनारस, प्र. सं. 2002

IQAC,
Co-ordinator,
Malati Vasantdada Patil Kanya
Mahavidyalaya, Islampur

M.V.P. Kanya Mahavidyalaya
Estd.1989
Islampur Dist.Sangli

PRINCIPAL,
MALATI VASANTDADA PATIL
KANYA MAHAVIDYALAYA.
(Arts & Commerce)
Islampur-415409 Dist. Sangli

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY

HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal No. 47026

ISO 9001:2015 QMS
ISBN / ISSN

ISSN 2319 - 359X

Volume - XII, Issue - II, March - August - 2024

Impact Factor 2023 - 7.537 (www.sjifactor.com)

Single Blind Review/Double Blind Review

Is Hereby Awarding This Certificate To

Dr. Varsha Yashodhan Patil

In Recognition of the Publication of the Paper Titled

Best Practices for Women Entrepreneurship in Home Science Education

Ajanta Prakashan,
Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004
Mob. No. 9579260877, 9822620877,
ajanta2023@gmail.com, www.ajantaprakashan.in

E- III - 7

Editor : Vinay S. Hatole

Scanned with OKEN Scanner

One Day International
Multi-Disciplinary Conference
On
NEP - 2020 DEVELOPMENT, OPPORTUNITIES AND CHALLENGES

Organised by

J.B.S.P. Mandal, Basmath

Shri Yoganand Swami Arts College,
Basmath, Dist.- Hingoli. (M.S.)

NAAC B Grade 2F 12B

Affiliated by : Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded (M.S.)

Date : 27th March, 2024

CERTIFICATE

This is to certify that **Dr. Varsha Yashodhan Patil, Assistant Professor, Department of Home Science, Malati Vasantdada Patil Kanya Mahavidyalaya, Islampur, Tal.- Walwa, Dist.- Sangli** has Participated in the One Day International Multi-Disciplinary Conference on "NEP-2020 DEVELOPMENT, OPPORTUNITIES AND CHALLENGES" on 27th March 2024.

His/her paper entitle "Best Practices for Women Entrepreneurship in Home Science Education" has been published in **Peer Reviewed Referred & UGC Listed Journal No. - 47026 - IDEAL - ISSN - 2319-359X with Impact Factor - 7.537.**

Organisor
Dr. N. R. Patil

M.V.P. Kanya Mahavidyalaya Estd.1988 Islampur Dist. Sangli

Convener
Dr. Varsha G. Dodiya

E- III - 7

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2319 - 359X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal No. 47026

ISO 9001 : 2015 QMS
ISBN / ISSN

Single Blind Review/Double Blind Review

M.V.P. Kanya Mahavidyalaya
Estd.1989
Jalgaon Dist.Sangli

Volume - XII, Issue - II
March - August - 2024
English Part - III

Impact Factor / Indexing
2023 - 7.537
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

Scanned with OKEN Scanner

CONTENTS OF ENGLISH PART - III

S. No.	Title & Author	Page No.
1	NEP 2020 and the Role of English in Shaping India's Higher Educational Landscape **Dr. Nilima Deshmukh**	1-5
2	Relationship between Playing Ability and Motor Fitness Components of Badminton Players **Dr. Kiran G. Pawar** **Dr. Jaswant Singh**	6-14
3	Enrichment in Physical Activities and Sports through National Education Policy **Dr. Sushil S. Battalwar**	15-19
4	Exploring the Influence of Digital Technology on Study Habits of B.Ed. Students **Dr. Pravin Kale**	20-24
5	NEP 2020 and Multicultural Education: Relevance in Contemporary Society **Dr. Nanasaheb B. Patil**	25-28
6	Impact of NEP 2020 on Entrepreneurial Mindset and Skill Development among College Students of Latur District **Miss. Sayyed Noorjahan Qayyum F.** **Dr. Umate Sainath**	29-34
7	Best Practices for Women Entrepreneurship in Home Science Education **Dr. Varsha Yashodhan Patil**	35-37
8	Shaping the Future: The Impact of National Education Policy 2020 on Higher Education **Dr. Jitendra Solanki** **Dr. Anita Sharma**	38-42
9	National Education Policy and Higher Education **Ramesh Bhanudas Jadhav**	43-48
10	The Connection between Values and Learning - A Brahma Kumaris Perspective **Dr. Madhavi M.** **Naina S.**	49-59
11	The Role of Higher Education in Implementing National Education Policy 2020: A Comprehensive Analysis **Dr. Bhange Prakash B.**	60-66

K.V.P. Kanya Mahavidyalaya Estd 1989 Islampur Dist Sangli

Scanned with OKEN Scanner

7. Best Practices for Women Entrepreneurship in Home Science Education

Dr. Varsha Yashodhan Patil
Assistant professor, Department of Home Science, Malati Vasantdada Patil Kanya Mahavidyalaya, Islampur, Tal.- Walwa, Dist.- Sangli.

Abstract

Modern Indian women are coming out of the houses and working with the men neck to neck in every field. Various jobs and business opportunities help them to entrepreneur in full boom. Home science in this respect is the milestone as we peep into the history. Present paper throws light on home science as best practice in women entrepreneurship.

Key Words - Home science, Education Entrepreneurship Economic Growth, Innovation.

Journey of Home Science

Home science carries different names in different places. E.g. domestic science, home economics, home craft, household art or science are the baby names of home science. Since these names are different the sole study subject in them is alike.

In America this subject is known as home economics whereas in England this carries the label Home science. In India to remove the confusion in 1952 Home Science Association (H. S. A.) came with one unique name as Home science throughout the country. At the beginning, B.Sc. home science and M. Sc. home science courses were available. B. A. with home science as an optional subject was available for rare occasion. In the course of time, this subject occupied the heart and mind of the learner and it grabbed the attention of the most of the learners. As a result, it became the need of time to teach the subject through syllabus. So home science was included in study curriculum of various colleges of various universities.

In Nagpur University, at the beginning, this subject was in arts faculty. Afterwards it was rechristened as B.Sc. Home science. In our Shivaji University this subject came under science faculty & offered as an optional subject at B.A. level.

Home Science Includes

Home science is the Bible on education for home life. It is having inclusive knowledge of home life. It covers various aspects as Home Management, Diet, food and Nutrition, health care,

Scanned with OKEN Scanner

curriculum as many pertinent life skills that will help students succeed independent of their chosen career paths. The most important aspect of Home Science is that students not only learn about subject matter that has relevance to their present life but will constantly be of use as they continue to grow. One area of Home Science that is considered to be among the most essential is the emphasis on personal development, decision making, capacity building and interpersonal communication skills.

Home Science education has played an important role in strengthening the inner ability of our women by enhancing their level of education and imparting financial independence. The employment opportunities for Home Science students are growing in leaps and bounds. Thus one can take up a job or can start an enterprise in production, industry, service industry, teaching jobs, technical jobs, or sales jobs, etc.

The role of Home Science in developing women power and thereby achieving the goals of family life and protecting the health of the family, community, nation, and the world at large cannot be compromised. Today the world demands flexibility and response to change for which many are not prepared. Home Science courses are designed to train women to meet these vital changes with confidence. It promotes one's professional skills, develops insights into home and family living, and prepares to enter a wide range of career options.

References

- Prabha Singh (2009) "Rural Women and Development of Entrepreneurship with special reference to Punjab" in Empowerment of Rural Women in India Kanishka Publishers, New Delhi.
- Lipi (2009) "Women Empowerment: Globalization and Opportunities" in Empowerment of Rural Women in India Kanishka Publishers, New Delhi.
- डॉ सुनंदा वसू ., डॉ .रजनी मेहरे)2010) "गृह व्यवस्थापन आणि आंतरिक सजावटश्री साईनाथ प्रकाशन ", नागपूर
- प्रा जून) मीना काळेले .डॉ .2010) "कौटुंबिक संसाधनांचे व्यवस्थापन अंआणि गृह सजावट .ण्ड कंपिंपळापुरे अॅ " पब्लिशर्स, नागपूर.
- प्रा. त्रिवेणी फरकाडे , सौसुलभा सुहास गोंगे .)2011) "कौटुंबिक संसाधनांचे व्यवस्थापन आणि गृह सजावट", पिंपळापुरे अॅण्ड कंपब्लिशर्स ., नागपूर.

IQAC,
Co-ordinator,
Malati Vasantdada Patil Kanya Mahavidyalaya, Islampur

M.V.P. Kanya Mahavidyalaya Estd.1989 Islampur Dist. Sangli

PRINCIPAL,
MALATI VASANTDADA PATIL
KANYA MAHAVIDYALAYA.
(Arts & Commerce)
Islampur-415409 Dist. Sangli

Scanned with OKEN Scanner

UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

।। संशोधक ।।

पुरवणी अंक ४ – मार्च २०२४ (त्रैमासिक)

- शके १९४५
- वर्ष : ९१
- पुरवणी अंक : ४

संपादक मंडळ

- प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे
- प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
- प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा
- प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक

- प्राचार्य डॉ. आर. एस. मोरे
- प्रो. डॉ. ए. के. वावरे
- डॉ. ए. व्ही. पोरे

*** प्रकाशक ***

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१
दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७१, ९४०४५७७०२०
Email ID : rajwademandaldhule1@gmail.com
rajwademandaldhule2@gmail.com

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

अंक मूल्य रु. १००/-
वार्षिक वर्गणी (फक्त अंक) रु. ५००/-, लेख सदस्यता वर्गणी : रु. २५००/-

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने 'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, पुणे.

टीप : या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

M.V.P. Kanya Mahavidyalaya Estd.1989 Islampur Dist. Sangli

Scanned with OKEN Scanner

२७. **सोलापूर जिल्ह्याच्या विकासात भाई. एस. एम पाटील यांचे योगदान:-एक चिकित्सक अभ्यास**
- पाटील किरण महादेव, प्रा.डॉ.वाघमारे विष्णू बब्रुवान -------------------------------- १३३

२८. **सोलापूर जिल्हयातील सिध्द संप्रदायाची मंदिरे**
- गोपाळ आडीअप्पा यरगल, प्रा.डॉ.चंद्रकांत सी.चव्हाण ----------------------------- १३६

२९. **शिवविश्रामस्थळ पट्टागड उर्फ विश्रामगड : एक अभ्यास**
- डॉ.दत्तात्रय जयसिंग ओवाळे --- १४०

३०. **'कर्ताज' पोर्तुगीजांचे भारतीय महासागरावरील मक्तेदारी परवानापत्र: एक चिकित्सक अभ्यास**
- प्रा. डॉ. गोवर्धन कृष्णाहरी दिकोंडा -- १४४

३१. **राजर्षी शाहू महाराजांचे शैक्षणिक जीवन**
- प्रा.डॉ.संजीव सुखलाल बोडखे -- १४८

३२. **कुरुंदवाडकर पटवर्धन : पेशवे कालखंडातील पराक्रमी सरदार घराणे**
- प्रा. डॉ. दत्तात्रय रामचंद्र डुबल ---१५२

३३. **पुरोगामी समाजसुधारक राष्ट्रमाता अहिल्याबाई होळकर**
- प्रा. डॉ. काशिलिंग रघुनाथ गावडे ---१५६

३४. **कृषिप्रधान मातृसत्ताक गणपरंपरेतील सण व उत्सव:वटपौर्णिमा**
- प्रा. डॉ. रामचंद्र घुले -- १६०

३५. **मराठवाड्यातील स्थानिक खाद्यसंस्कृतीचा इतिहास**
- प्रा. डॉ. सुनिता हनुमंतराव गित्ते --१६५

३६. **इतिहास लेखनातील नवविचार व स्थानिक इतिहास लेखन प्रवाह याचा अभ्यास**
- प्रा.डॉ.संतोष तुकाराम कदम -- १६८

३७. **स्थानिक इतिहास विशेष संदर्भ हिंगणे**
- डॉ. दत्तात्रय पांडुरंग खराडे ---१७२

३८. **कर्मवीर भाऊराव पाटील यांच्या शैक्षणिक कार्यातून सामाजिक परिवर्तन**
- डॉ उर्मिला क्षीरसागर -- १७६

३९. **सातारा जिल्ह्यातील सैनिकांचा भारतीय लष्करी दलातील सहभाग आणि कामगिरी**
- प्रा. किरण गणपत कुंभार ---१७९

४०. **सामाजिक इतिहास लेखनातील नवीन आयाम – विशेष संदर्भ कुंभार समुदाय**
- डॉ. रामचंद्र वसंत कुंभार ---१८३

M.V.P. Kanya Mahavidyalaya Estd.1969 Islampur Dist. Sangli

Scanned with OKEN Scanner

कृषिप्रधान मातृसत्ताक गणपरंपरेतील सण व उत्सव:वटपौर्णिमा

प्रा. डॉ. रामचंद्र घुले
मालती वसंतदादा पाटील कन्या महाविद्यालय, इस्लामपूर
ramghule81@gmail.com, 7972724734

प्रास्ताविक :

मानव प्राणी हा संस्कृती निर्माण करणारा आहे. लोकसंस्कृती सदैव प्रवाही राहते. ती विकसित संस्कृती वा सभ्यतेपेक्षाही आदिम असते. तिचे अंतरंग व शाखा बहुविविधांगी असतात. लोकसंस्कृतीचा गाभा कृषी व एतदेशीय संस्कृतीशी निगडित असतो. विविध सण व उत्सव हे लोकसंस्कृतीचे संचित होय. सण व उत्सव लोकसंस्कृतीचे जिवंत उमाळेच असतात. तसेच लोकसाहित्या व लोकसंस्कृतीतून प्रकट होणाऱ्या इतिहासाकडे आजपर्यंत कोणत्याही इतिहासकारांनी फारसे लक्ष दिलेले नाही. इतिहास हे शास्त्र आहे या व्याख्येखाली बहुजनांचा इतिहास दडपला गेला आहे. अश्या कृषिप्रधान मातृसत्ताक गणपरंपरेतील एक सण म्हणजे वटपोर्णिमा होय. त्याचा लोकसंस्कृतीशास्त्रीय पद्धतीने चिकित्सक अभ्यास करता येईल.

ज्येष्ठ महिन्यातील शुक्ल चतुर्दशीला येणारी पौर्णिमा म्हणजे पौर्णिमा. आपल्या पतीला दीर्घायुष्य लाभावं या भावनेनं वटसावित्रीचे व्रत स्त्रिया ज्येष्ठ शुद्ध त्रयदेशीपासून पौर्णिमेपर्यंत करतात. विवाहित सवाष्ण स्त्रिया नटूनसजून, नवी पैठणी नेसून, दागदागिने व सौभाग्याचं लेणं लेवुन समूहाने एकत्र जाऊन वडाच्या झाडाची पूजा करतात. महाराष्ट्रात सुवासिनी सावित्रीचे व्रत करताना वडाच्या मुळाशी पाणी घालतात. त्याला प्रदक्षिणा घालून सुताचे धागे फेर मारून गुंडाळतात. वटवृक्षाची पूजा करताना आंबा पुरणपोळ्यांचा नैवेद्य दाखवितात. पूजा विधीनंतर सुवासिनी एकमेकींना वाण देतात. सत्यवान सावित्रीची कथा वाचतात. कथेतील 'सावित्री' ही भारतीय संस्कृतीत अखंड सौभाग्याचे प्रतीक मानली जाते. महान पतीव्रतेत तिची गणना होते.

की वर्ड : लोकसंस्कृती, वटसावित्री, सावित्रीव्रत, वटपौर्णिमा

संशोधन समस्या:

इतिहास संशोधनामध्ये लोकसंस्कृती, लोकसाहित्याचा आधार घेणे अशास्त्रीय मानले जाते तसेच वटसावित्रीचे व्रताचे वास्तव स्वरूप समजून घेणे. वटपौर्णिमा सणाची लोकसंस्कृती व स्त्रीवादी भूमिकेतून चिकित्सा करणे

संशोधन पद्धती :

ऐतिहासिक संशोधन पद्धतीचा वापर करताना दुय्यम संदर्भ साधनांचा संशोधकाने वापर केला आहे.

संशोधनाचा उद्देश :

१. लोकसंस्कृती म्हणजे काय हे समजून घेणे.
२. वटपौर्णिमा सणाची लोकसंस्कृती व स्त्रीवादी भूमिकेतून चिकित्सा करणे.
३. इतिहास लेखनात लोकसाहित्याचे कसे सहाय्य होते याचा अभ्यास करणे.
४. सत्यवान सावित्रीची या व्रतकथेचा चिकित्सक अभ्यास करणे.

शोधनिबंधाचे गृहीतक :

वटपौर्णिमा हा कृषि संस्कृतीतील सण वृक्ष-निसर्ग पूजेशी निगडित आहे.

वडवृक्ष :

लोकसंस्कृतीमध्ये 'वड' एक पवित्र वृक्ष मानला जातो. हा अंजिराच्या जातीचा वृक्ष आहे. यास संस्कृतमध्ये यास 'वट' तर इंग्रजीमध्ये यास 'बनियान ट्री' असे म्हणतात. फायकस प्रजाती मधील 'फायकस बेंगालेन्सिस' या जातीमधला वृक्ष आहे. याची पाने मोठी लंबवर्तुळाकार, हिरव्या तककीत रंगाची असतात. याची फळे गोल लालबुंद आकाराची अत्यंत आकर्षक असतात. याला अनेक पारंब्या फुटतात. वडाची झाडे भारतीय उपखंडात सर्वत्र आढळतात. १९५० मध्ये वडाचे झाड भारताचा राष्ट्रीय वृक्ष म्हणून घोषित करण्यात आला आहे. भारतीय संस्कृतीत हा एक 'अक्षय वृक्ष' मानला जातो. पशु पक्षांना आश्रय देण्याच्या गुणधर्मामुळे वटवृक्षास 'आधारवड' म्हणतात. वडाचे अनेक औषधी गुणधर्म आहेत. वडाच्या पारंब्या तेलात कढवून केसांना लावल्यावर केसांची वाढ होते. संधिवात असणाऱ्यांना वडाच्या जमिनीतील मुळ्या खायला देतात.[१]

V.P.Kanya Mahavidyalaya Estd.1989

Scanned with OKEN Scanner

असेल तर बाभळीच्या झाडाला बांधा पिंपळावडाच्या झाडाला कशाला बांधता. त्यात काय नरसोबा असतो? बाभळ शेतीचे रक्षण करते. उत्कृष्ट प्रकारचे जळण देते. बैलगाडी बांधण्यास उपयोग होतो. त्याची साल कातडी कमाविण्यास उपयुक्त असते. घर बांधण्यास लाकूड मजबूत असून कित्येक वर्षे टिकते. बाभळीची पाने व शेंगा शेरडा मेंढराच्या पोटाची भूक भागवितात. दात घासण्यास कोवळ्या काटक्यांचा उपयोग होतो मग अशा झाडाला पार बांधा. कशाला पिंपळाला बांधता?

कॉन्ट्रॅक्ट मॅरेज, लिव्ह इन रिलेशनशिप इत्यादी जीवन प्रणालीमध्ये राहणाऱ्या आधुनिक जोडप्यांना प्रत्येक वर्षी नवा जोडीदार हवा असतो. रॅडिकल फेमिनिझमला वैतागलेल्या अखंडित सौभाग्यवती पत्नीपीडित पुरुषांनी 'हीच पत्नी पुढील जन्मीच नाही तर जन्मोजन्मी मिळू नये' म्हणून वटसावित्री पौर्णिमेला वडाच्या झाडाभोवती फेऱ्या मारल्या तर नवल वाटू नये.

संदर्भ :

१. बंग राणी, गोईण, ग्रंथाली प्रकाशन मुंबई, पहिली आवृत्ती १९९९, पान नं. २५.
२. मराठी विश्वकोश
३. जाधव व्यंकटराव, महिलांचे व्रतवैकल्ये: दशा आणि दिशा, गाडगे बाबा प्रकाशन, वसमत, द्वितीय आवृत्ती २००६, पान नं.८८,८९.
४. राणा अशोक, ''सावित्रीची वटवट,'' चित्रलेखा, २७ ६ २००५, पान नं ३७.
५. सहस्रबुद्धे सुप्रिया, ग्रीकपुराण,रोहन प्रकाशन पुणे, पहिली आवृत्ती २०१८,पान नं.१२५,१२६.
६. राणा अशोक, भारतीय मातृदेवता, प्राजक्त प्रकाशन, पुणे जानेवारी २०१९ पान नं. २४ व २५.
७. भारतीय संस्कृती कोश खंड ८, तृतीयावृत्ती जानेवारी २००० ,पान नं. ४७१.
८. राणा अशोक वटसावित्रीची वटवट चित्रलेखा २००५,पान नंबर ३९.
९. पाटील शरद, जातिव्यवस्थाक सामंती सेवकत्व, खंड दोन, प्रथम आवृत्ती ,सप्टेंबर १९९६, सुगवा प्रकाशन पुणे, पान नं. १७३.
१०. डॉ. गाडगीळ स.रा., लोकायत, लोकवांग्मय गृह प्रकाशन, मुंबई आवृत्ती चौथी,२००८, पान नं. ८५ व ८६.
११. जाधव व्यंकटराव, महिलांचे व्रतवैकल्ये, दशा आणि दिशा, गाडगे बाबा प्रकाशन, वसमत द्वितीय आवृत्ती २००६, पाननं.८९,९०

■■■

IQAC,
Co-ordinator,
Malati Vasantdada Patil Kanya
Mahavidyalaya, Islampur

M.V.P. Kanya Mahavidyalaya Estd.1989 Islampur, Dist. Sangli

PRINCIPAL,
MALATI VASANTDADA PATIL
KANYA MAHAVIDYALAYA.
(Arts & Commerce)
Islampur-415409 Dist. Sangli

Scanned with OKEN Scanner